महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

दलित आंदोलन की देन है दलित साहित्य -मोहनदास नैमिषाराय

हिंदी विश्वविद्यालय में साहित्य विद्यापीठ का आयोजन

वर्धा दि. 23 अक्टूबर 2012 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में दलित चिंतक एवं बयान पत्रिका के संपादक मोहनदास नैमिषाराय ने दलित साहित्य और आंदोलन विषय पर व्याख्यान में कहा कि दलित आंदोलन ने ही दलित साहित्य का जन्म दिया है जबकि ललित साहित्य में ऐसा नहीं हुआ है। दलित साहित्य अनुभव की उपज है और इस साहित्य ने समाज को बदलने में अहम भूमिका निभाई है। जिस प्रकार ब्लैक लिटरेचर ने अमेरिका में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है वैसेही दलित साहित्य अपने देश में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने दलित साहित्य के लिए डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले के सामाजिक चिंतन को अनिवार्य माना। वे दलित साहित्य को सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन मानते है। हिंदी दलित साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी पट्टी में दलित साहित्य को आंदोलन के रूप में हिंदी साहित्य ने विस्तारित किया है। उन्होंने दलितेतर साहित्यकारों के दलित साहित्य में योगदान को स्वीकार किया और स्वदेश दीपक के कोर्टमार्शल नाटक का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा दलित साहित्य के उभार में हंस के संपादक राजेन्द्र यादव के योगदान को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने माना कि यह साहित्य आत्मकथा के बाद कहानी और कविताओं में भी अभिव्यक्त हुआ है और इसका क्षेत्र विस्तार हुआ है। दलित साहित्य आंदोलन की शुरूआत मराठी साहित्य से हुई परंतु हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी इसकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति हुई है। दलित साहित्य और संचार माध्यम के संबंध का जिक्र करते हुए नैमिषाराय ने कहा कि आज पत्रकारिता के माध्यम से दलित साहित्य को स्थान मिल रहा है और इस मीडिया में भी दलित साहित्य को महत्व दे रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य विभाग के प्रो. रामवीर सिंह ने की और अपने विचार भी रखे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रीति सागर ने किया। साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. के. सिंह ने संचालन किया। इस अवसर पर विभाग के अध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी